AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

प्राचीन भारत के इतिहास में सिक्कों का स्रोत के रूप में महत्व

ORIGINAL ARTICLE

Author
नवनीत कुमार दांगी
शोधार्थी, इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

शोध सार

सिक्कों का प्राचीन भारत के इतिहास के स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे पूर्वज जाने–अनजाने में ही इन सिक्कों के माध्यम से हमारे लिये जानकारी के महत्वपूर्ण स्रोत छोड़ गए जिससे वर्तमान समय में अतीत की बहुत सारी जानकारी प्राप्त होती है। सिक्कों में प्रयुक्त धातु, सिक्कों का तौल, सिक्कों पर उत्कीर्ण लिपि आदि से इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। सिक्कों से अतीत काल के राजनीतिक स्थिति का ज्ञान प्रमुखता से होता है। सबसे प्रथम किस वंश के राजा द्वारा जारी किया गया, जारी करने वाला राजा और उसके सिहासनरूढ़ होने की तिथि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। प्राचीन भारत के इतिहास के कालक्रम को प्रमाणिक बनाने में सिक्कों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सिक्कों पर अनेक देवी–देवताओं या धर्म से संबंधित प्रतीक चिन्ह बने हुए है इससे उस काल के धार्मिक अवस्था की जानकारी मिलती है। सिक्कों से उस काल की मौद्रिक व्यवस्था के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है जिस काल में बड़ी संख्या में मुद्राएँ जारी की गयी हो। इससे उस काल की आर्थिक समृद्धि का पता चलता है साथ ही सिक्कों में प्रयुक्त धातुएँ भी आर्थिकता का परिचायक होती है। सिक्कों के प्राप्ति स्थान से किसी काल की भौगोलिक सीमा रेखा तय करने में मदद करती है। इस प्रकार सिक्कों से विविध प्रकार की बातों का ज्ञान होता है जो इतिहास के बहुमूल्य स्रोत है। सिक्को का विकास मानव जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक था। इसके माध्यम से लेन–देन की प्रक्रिया आसान हुई और व्यापार वाणिज्य का भी विकास तीव्र गति से होना प्रारम्भ हुआ। नवपाषाण काल तक लेन–देन वस्तु विनिमय के आधार पर होता था। हड़प्पा वासियों ने भी वस्तु विनिमय प्रणाली और मुहरों के प्रयोग से व्यापार खडा किया था। वैदिक काल से सिक्कों के प्रारंभिक स्वरुप का आभास होता है। ऋग्वेद में निष्क, पाद शतमान, हिरण्यपिण्ड जैसे शब्दों का उल्लेख मिलता है। ये कोई सिक्का नही था अपितु निश्चित तौल की वस्तुएँ थी जिसका प्रयोग लेन–देन में होता था। भारतीय उपमहादीप में सिक्कों का प्रयोग छठी सदी ई. पू. से मिलने लगता है। भारत के इन प्राचीन सिक्कों को 'आहत' या 'कार्षापण' कहा जाता था। इन सिक्कों पर कुछ लिखा हुआ नही है। ये चाँदी और ताम्बे के बने हुए हैं। इन पर ज्यामितिय आकार के चिन्ह बने हुए हैं। भारत मे यूनानियों के आगमन के बाद सिक्कों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। सर्वप्रथम लेख युक्त सिक्के इंडो–ग्रीक शासकों ने ही जारी किए। इन सिक्कों पर राजा का नाम, तिथि, उपाधियाँ एवं देवी देवताओं का अंकन होने लगा। बाद के काल मे भारतीय सिक्कों के निर्माण में यूनानियों का प्रभाव पड़ा और भारतीय सिक्के भी यूनानियों के अनुकरण पर जारी किये जाने लगे। इस प्रकार सिक्कों से विभिन्न कालों के बारे में विविध जानकारी प्राप्त होती है।

मुख्य शब्द

वस्तु विनिमय, सिक्का, इतिहास, धातु, भाषा, कला.

विषय वस्तु

इतिहास के स्रोत के रूप में सिक्के काफी महत्वपूर्ण हैं। सिक्कों के अवलोकन से प्रथम दृष्टि में ऐतिहासिक सूचना नही मिलती है किन्तु उसके माध्यम से बहुत सारी ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का अनुमान लगाया जा सकता है।[1] सिक्कों की सहायता से न केवल मौद्रिक इतिहास व आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता है वरन् राजनैतिक, कला, धार्मिक, साहित्यक तथा अन्य प्रकार की अमुल्य जानकारी सिक्कों की सहायता से प्राप्त होती है। सिक्कों से उस काल के व्यापार व वाणिज्य का ज्ञान होता है। संसार में सर्वप्रथम तिथि का ज्ञान इन्ही सिक्कों के सहारे होता है। इन सब के अतिरिक्त सिक्कों से धातु का ज्ञान पता चलता है। भारत के प्राचीनतम सिक्के 'आहत सिक्के कहे जाते हैं। उन पर किसी प्रकार का लेख नही है फिर भी बनावट शैली तथा चिन्ह उस काल के विभिन्न कडियों को जोडने में आपस में मदद करती है। वस्तुतः इतिहास के पुरातात्विक स्रोत में सिक्का महत्वपूर्ण स्रोत है।[2]

206 ई. पू. से लेकर 300 ई० तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें सिक्कों के माध्यम से ही होता है। प्राचीन भारतीय सिक्के ताम्बा, सोना, चाँदी तथा सीसा के बने हैं। कुछ सिक्के मिश्र धातुओं के भी बने है।[3] आहत सिक्कों के बाद यूनानियों ने अभिलेख वाले सिक्के जारी किये जिससे लगभग तीस यूनानी राजाओं के बारे में पता चला।[4] उदाहरण के लिए यूनान और रोम के इतिहासकारों से केवल चार–पाँच यूनानी राजाओं के बारे मे पता चलता है जबकि सिक्कों के जरिये लगभग तीस शासकों के बारे मे पता चला। प्राचीन भारतीय गणराज्यों के विषय विस्तृत जानकारी सिक्कों से ही पता चलता है। पांचाल, मालवा, यौधेय आदि गणराज्यों का पूरा इतिहास सिक्कों के आधार पर लिखा गया है।[5] गुप्त काल के विभिन्न राजाओं के विषय मे बहुत सारी जानकारी सिक्कों से ही मिलता है, जैसे समुद्रगुप्त का वीणावादक होना, अश्वमेध यज्ञ करना आदि। गुप्त शासक काचगुप्त तथा रामगुप्त की जानकारी सिक्कों से पता चलता है।[6] सिक्कों की सहायता से ही समुद्रगुप्त के शासन काल की ठीक–ठीक तिथियाँ प्राप्त करने में सहायता पहुंचाई। गुप्तकाल के सिक्कों से राजा के व्यक्तिगत रुचि, पहनावा ओढ़ना, वस्त्र, आभूषण तथा विभिन्न उपाधियों के विषय में जानकारी मिलती है। इनके सिक्कों में आध्यात्मिकता का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। इनके सिक्कों से श्रेणी संगठनों के विषय में पता चलता है। सिक्कों की गुणवत्ता के आधार पर तथा संख्या के आधार पर वित्तीय स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है जैसा की गुप्तोत्तर काल में दिखता है। सिक्कों की संख्या और गुणवत्ता के आधार पर गुप्तोत्तर काल को आर्थिक अवनति का काल माना जाता है। वहीं डायडेल जैसे विद्वानों ने इसका खन्डन किया है और बताया कि बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था तथा आवश्यकता का निर्वाह करने के लिये धातु के परिमाण में कमी की जाती है।[7]

पूर्व मध्यकाल के सिक्कों पर निर्गत किसी सता का नाम नही मिलता है। कुछ सिक्कों पर अंकित तिथि उत्तरावर्ती गुप्त शासकों के सिक्के अपवाद समझे जा सकते हैं। क्षत्रपों द्वारा जारी सिक्कों पर शक संवत मे तिथि अंकित है। अगर सिक्कों पर तिथि अंकित नही है फिर भी उसके काल के विषय में जान सकते है जैसे सिक्कों के बनावट, प्राप्ति स्थल, लेखन शैली, भाषा, राजा के नाम और उपाधियों से भी तिथि का ज्ञान हो जाता है। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत के इतिहास को जानने के लिये सिक्के कम उपयोगी सिद्ध हुए हैं, क्योकि इस काल के शासकों के बहुत कम सिक्के मिले हैं।[8] सिक्के यदि बडी संख्या में एक स्थान पर मिलें तो इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वह स्थान उस शासक के राज्य का भाग होगा या उसका टंकशाल केन्द्र रहा होगा। अगर किसी शासक के एकाध सिक्के मिले तो व्यापारिक संबंध को बताते हैं जैसे भारत में रोमन सिक्के का मिलना आपसी व्यापारिक संबधों का पता चलता है। इसके अलावा सिक्कों पर बने जहाज आदि के चित्र से सामुद्रिक व्यापार के विषय में अनुमान लगा सकते हैं।[9] वस्तुतः सिक्कों का स्रोत के रूप में महत्व को निम्न परिच्छेदों में देख सकते हैं:

1. **सिक्कों से इतिहास का ज्ञानः** यद्यपि प्राचीन भारत का इतिहास क्रमबद्ध रूप से प्राचीन भारतीय साहित्यों

मे नही मिलता है लेकिन साहित्यक सामाग्रियाँ भरी पड़ी है। इतिहास के बिखरे हुए विविध पहलुओं को क्रमबद्ध तथा विश्वसनीय बनाने मे पुरातात्विक सामाग्रियाँ हमेशा सहायक रही है जिनमें अभिलेखों और सिक्कों का अतिविशिष्ट स्थान रहा है। भारतीय इतिहास के कालक्रम को व्यवस्थित करने में सिक्कों का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में यूनानी राजाओं का पूरे शासनकाल की जानकारी सिक्कों की सहायता ही प्राप्त होती है। शक राजाओं के शासन का पूरा वृतांत सिक्कों के माध्यम से ही उपलब्ध होता है। सिक्कों पर अंकित तिथियों के माध्यम से ही स्पष्ट पता चलता है कि कौन राजा कब शासन करता था? संसार में इन्ही सिक्कों पर सर्वप्रथम तिथियाँ मिलती है।[10] सिक्कों के माध्यम से ही एक वंश के पतन तथा दूसरे वंश के अधिकार को भी जाना जा सकता है।

2. **भाषा एवं लिपि का ज्ञानः** सिक्कों के अध्ययन से सिक्कों पर अंकित भाषा तथा लिपि का ज्ञान प्राप्त होता है। भारत, सबसे प्राचीनतम सिक्कों पर कोई लेख नहीं मिलता है। भारत में दूसरी सदी ई.पू. से युनानियों के अनुकरण पर सिक्के में लेख अंकित किये जाने लगे। यह भारत के मुद्रा प्रचलन में बहुत बड़ा परिवर्तन था। इसके बाद सभी काल के सिक्कों पर लेख अंकित है। सिक्कों पर ऐसी भाषा और लिपि का प्रयोग किया जाता था जिसे जनता असानी से समझ सके। आज वर्तमान समय में भी भारत की मुद्राओं पर भिन्न भाषाओं के लेख लिखे रहते है ताकि जनता समझ सके। भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में जारी सिक्कों में ब्राह्मीं तथा खरोष्ठी दोनों लिपियों का लेख मिलता है, क्योकि इस क्षेत्र में खरोष्ठी समझने वाले लोग रहते थे। कुषाण शासकों ने भी ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपि और यूनानी तथा प्राकृत भाषा के लेख को सिक्कों पर अंकित करवाया।[11]

   सातवाहनों ने प्राकृतभाषा तथा ब्राह्मी लिपि का प्रयोग सिक्कों पर किया। गणराज्यों में औदुम्बर, कुणिनद के सिक्कों पर एक और ब्राह्मी लिपि तथा दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि का प्रयोग किया जाता था। बाद में गणराज्यों के सिक्कों में ब्राह्मी लिपि के साथ प्राकृतिक भाषा के स्थान पर संस्कृत का प्रयोग किया जाने लगा जैसे मालवान जय के स्थान पर मालवान जयः आदि।[12] गुप्त शासकों ने भी संस्कृत लेख वाले सिक्के जारी किये।[13] इस प्रकार सिक्कों पर अंकित भाषा और लिपि से उस कालकी प्रचलित भाषा तथा लिपि का ज्ञान आसानी से हो जाता है।

3. **धातु का ज्ञानः** सिक्कों से तत्कालीन समय में प्रचलित धातु के बारे में पता चलता है। जिस काल में सिक्कों को जारी किये गए होंगे उस काल के धात्विक तकनिक के विषय में सिक्कों के परीक्षण से पता चलता है। भारत के प्राचीनतम् 'आहत' सिक्के चाँदी के बने हुए हैं और कुछ सिक्के ताम्बे के भी हैं। भारत में सर्वप्रथम कुषाण शासकों ने सोने का सिक्का जारी किया। सातवाहनों ने निम्न मूल्य के पोटीन के सिक्कों को जारी किया।[14] गुप्तकाल में सबसे अधिक मात्रा में सोने के सिक्के जारी किये। उसके अतिरिक्त इन्होंने चाँदी, ताम्बा के भी सिक्कों को जारी किया।

4. **धार्मिक मतों का ज्ञानः** सिक्कों के अध्ययन से विभिन्न काल में प्रचलित धार्मिक मतों का भी परिचय मिलता है।[15] सिक्कों पर अंकित विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियों से इस काल के धार्मिक मत से संबंधित अनेक बातो का ज्ञान कराती है। भारत के प्राचीनतम सिक्के पर चिन्ह खुदे हैं उसे किसी विशेष धर्म से नही जोड़ा जा सकता। ये श्रेणी या संघो के प्रतीक चिन्ह रहे होंगे लेकिन फिर भी चक्र से सूर्य, वृषभ से शैव मत एवं स्वास्तिक चिन्हों से ब्राह्मण धर्म का अनुमान लगाया जा सकता है।

   सिक्कों के अध्ययन से पता चलता है कि उत्तर–पश्चिम भारत तथा दक्षिणी–पश्चिमी भाग में शैव मत का प्रचार बहुत समय से था। ई. पू. के सिक्कों पर और बाद के सिक्कों पर नंदी और त्रिशूल की आकृतियाँ बनी मिली है जिससे यह निश्चित होता है कि उस भाग में शैव मतानुयायी रहते थे। प्राचीन भारत के गणराज्य यैधेय, औदुम्बर, कुणिनद तथा मालव 'गण' के सिक्के पर वृषभ (नन्दी) की मूर्ति पायी जाती है। पांचालों के सिक्कों पर शिवलिंग का अंकन मिलता है।[16] अतः इन सिक्कें के आधार पर कहा जा सकता है कि इन क्षेत्रों में शैव मत का प्रचार था। यूनानी राजाओं ने भी जो सिक्के जारी किये उनके सिक्कों पर भी नंदी का अंकन

मिलता है। कुषाण शासक टीम विम कडफिसस के सिक्के पर नंदी के साथ शिव की मूर्ति मिलती है।[17] कनिष्क के सिक्कों पर भी शिव मूर्ति तथा यूनानी लिपि में ओइशो (शिव) लिखा हुआ मिलता है। गुप्त काल के सिक्कों में भी अनेक देवी–देवताओं का अंकन मिलता है। लक्ष्मी देवी की कमलासन वाली मूर्ति अनेक सिक्कों पर मिलता है।[18] गुप्त काल के सिक्कों पर गरुड़ पक्षी का अंकन मिलता है कि इस काल में वैष्णव धर्म का प्रचार था। इस प्रकार सिक्कों पर अंकित मूर्ति विभिन्न धार्मिक तथा विश्वासों को व्यक्त करती है। अतः धार्मिक इतिहास के स्रोत के रूप में सिक्कों का महत्वपूर्ण स्थान है।

5. **सिक्कों से कला का ज्ञानः** भारतीय ललित कला का इतिहास बहुत ही व्यापक है। जीवन के प्रत्येक अंग पर कला का समावेश था। भारत के सबसे प्राचीन सिक्के (आहत सिक्के) में किसी प्रकार की कला परिलक्षित नही होती है। इसे साधारण व्यक्ति द्वारा धातु के पत्तर को पीटकर तैयार करता था।[19] यूनानियों के भारत में आगमन के बाद भारतीय सिक्कों पर लेख और चित्रों को अंकित करने की प्रथा आरम्भ हुई। भारतीय यूनानी राजाओं के सिक्के पर राजा के चित्र के साथ पृष्ठभाग पर पशुओं का अंकन किया जाता था। इसके बाद भारत में प्रायः जितने भी साम्राज्य की स्थापना हुई उसके शासकों ने कलात्मक सिक्के जारी किये। प्राचीन भारत में गुप्त शासकों के सिक्के सबसे अधिक कलात्मक हैं। इस प्रकार सिक्कों से कला का ज्ञान हमे मिलता है।

निष्कर्ष

इतिहास के विभिन्न पहलूओं को समझने में सिक्कों का महत्वपूर्ण स्थान है। सिक्कों की सहायता से इतिहास के कई अनसुलझे पहलुओं को सुलझाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मानव के प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक के आर्थिक अवस्था को समझने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की है। मानव सभ्यता के विकास के बाद आये आर्थिक परिवर्तनों को समझने में सहायक रही। इन सिक्कों पर विभिन्न प्रकार के चित्र, लेख, देवी–देवताओं का अंकन, सिक्कों में अन्य धातुओं का मिश्रण के सूक्ष्म अध्ययन से अनेक ऐतिहासिक तथ्य प्रकाश में आ रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. सिंह, उपिन्दर (2018) *प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास,* पियर्सन, दिल्ली, पृ. 51–51।
2. उपाध्याय, वासुदेव (2001) *प्राचीन भारतीय मुद्राएँ,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ. 36–37।
3. चौधरी, राधाकृष्ण (1986) *प्राचीन भारत का इतिहास,* जानकी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 10।
4. सिंह, उपिन्दर (2018) *प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास,* पियर्सन, दिल्ली, पृ. 51–54।
5. झा, द्विजेन्द्र नारायण; श्रीमाली कृष्ण मोहन (2008) प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन, निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. 10।
6. वही, पृ. 280।
7. सिंह, उपिन्दर, (2018) *प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास,* पियर्सन, दिल्ली, पृ. 51–54।
8. झा, द्विजेन्द्र नारायण; श्रीमाली कृष्णमोहन, (2008) प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन, निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. 17।
9. उपाध्याय, वासुदेव, (2001) *प्राचीन भारतीय मुद्राएँ,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ. 27।
10. वही, पृ. 25।
11. वही, पृ. 14।
12. वही, पृ. 15।

13. सिंह, उपिन्दर, (2018) *प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास,* पियर्सन, दिल्ली, पृ.51–54।
14. राय, कौलेश्वर (2008, *प्राचीन भारत का इतिहास,* किताब महल, पटना, पृ. 15–16।
15. उपाध्याय, वासुदेव (2001) *प्राचीन भारतीय मुद्राएँ,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ. 27।
16. वही, पृ. 27।
17. महाजन, वी. डी. (2008) *प्राचीन भारत का इतिहास,* एस चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, पृ. 25–26।
18.. गुप्ता, परमेश्वरी लाल (2014) भारत के पूर्वकालिक सिक्के, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 254–281।
19. सिंह, उपिन्दर, (2018) *प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास,* पियर्सन, दिल्ली, पृ.51–54।

––==00==––